कुल पृष्ठ संख्या 32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या.... 677278

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा 2017

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ....

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ....

नोट :- परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम — हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय भारतीय चित्रकला

परीक्षा का दिन बुधवार

दिनांक 22-03-2017

नोट :- परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :- (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांको की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंको का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017

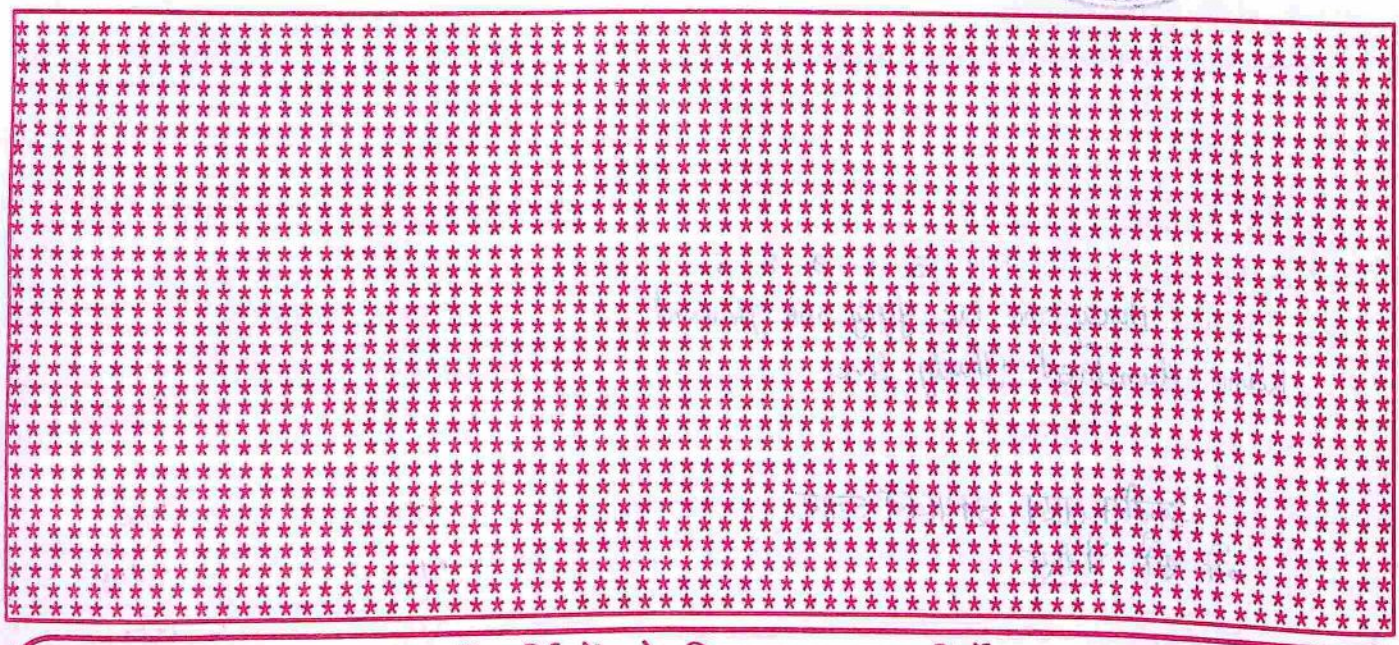

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्यामेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

01 सिंहनपुर की गुफाएँ 'रायगढ़ रियासत' में हैं। सिंहनपुर की गुफाओं में मुख्य रूप से "हाथी, घोड़ा, भैंसा, खरगोश, सुअर," ~~छिपकली~~ आदि पशुओं के चित्र हैं।

02. बाजारकेव पंचमढ़ी में है यहाँ "विशालकाय बकरी" का चित्र है।

03. 'बोधिसत्व पद्मपाणि' का चित्र "अजन्ता की गुफा संख्या 01" में है।

04. हल्लीसक:- बाघ गुफाओं में चित्रित नृत्यदल समुह को 'हल्लीसक' कहा जाता है। इसमें सात नारियाँ नृत्यमुद्रा में चित्रित है।

05. 'पूर्व का राफेल' बाबरकालीन ईरानी-हिरात कलम के प्रसिद्ध चित्रकार 'बिहजाद' को कहा जाता है।

06. 'पार्थ सारथी' नामक चित्र बंगाल शैली के प्रसिद्ध चित्रकार "नंदलाल बसु" ने बनाया। तथा 'पार्थसारथी' नामक शीर्षक से एक चित्र "कृपालसिंह शेखावत" ने भी बनाया।

07. कम्पनी शैली के दो प्रमुख केंद्र थे-
(i) बंगाल
(ii) पटना।

08 1896 में "कोलकाता स्कूल ऑफ आर्ट" के प्रिन्सिपल "ई.बी. हैवेल" थे।

09. पहाड़ी शैली में आरंभिक शैली "गुलेर शैली" है। पहाड़ीशैली में इसका उदय 18वी शताब्दी के उतराई में हुआ। तथा सबसे प्राचीनतम शैली "बसोहली शैली" थी।

10. 'नादिर उल असर' की उपाधि "उस्ताद मन्सूर" को दी गई।

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

11. राम जैसवाल के दो प्रमुख चित्रों के शीर्षक निम्नलिखित हैं-
(i) पूजा का दिन
(ii) आँगन में दोपहरी।

12. कलाविद् सम्मान से सम्मानित जयपुर के दो चित्रकार निम्नलिखित हैं-
(i) स्व० सुमहेन्द्र
(ii) स्व० सुरेन्द्र मँजुल।

13. अजन्ता के चित्रों में व्यक्त नारी सौंदर्य
अजन्ता के चित्रों में नारी का अद्भुत सौंदर्य उभरकर आता है। अजन्ता के चित्रों में नारी सौंदर्य को रेखाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। नारी चित्रण को अजन्ता में प्रमुख स्थान मिला है। खञ्जनाकृति नेत्र, अधर व शारिरीक अंगों की बनावट दर्शनीय है। चित्रों में नारी को कहीं भी असुन्दर नहीं बनाया गया है। आभूषणों से अलंकृत चित्रित किया गया है।

14. अकबरकालीन 3 प्रसिद्ध चित्रकार निम्नलिखित हैं-
(i) ख्वाजा अब्दुस्समद 'शिराजी'
(ii) मीर सैयद अली 'जुदाई'
(iii) बसावन।

15. राजस्थान की बीकानेर चित्रशैली पर मुगल शैली का प्रभाव है। बीकानेर शैली में चित्रों में रंगयोजना, रेखांकन, गति तथा लय मुगल शैली के समान है। तथा वस्त्राभूषणों से अलंकृत स्त्री आकृतियाँ तथा पुरुषों की वेशभूषा जामा, पायजामा, कमर पर पटका पहने चित्रित किया गया है।

16. अजन्ता की गुफा संख्या 1 में मुख्य रूप से भगवान बुद्ध से सम्बंधित विषयों का चित्रण हुआ है। गुफा संख्या 1 में 'बोधिसत्व पद्मपाणि' का चित्र प्रमुख

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उदाहरण है। इसके अलावा 'भगवान बुद्ध व यशोधरा के विवाह' का दृश्य, 'राजा शिवि की कथा' का चित्रण इसके अलावा 'प्रलोभन' नामक चित्र भी अजंता की गुफा संख्या 1 में चित्रित है। सिद्धार्थ की तपस्या व कामदेव का आक्रमण' चित्र प्रमुख है।

17. अजन्ता के चित्रों की तीन विशेषताएं निम्नलिखित है-

(i) रेखाओं की प्रधानता :- अजंता के चित्रों में रेखाओं की प्रधानता है। कुछ रेखाओं के माध्यम से ही सम्पूर्ण मनोभावों को व्यक्त किया है।

(ii) प्रकृति का सौंदर्य :- अजंता गुफा चित्रों में 'प्रकृति का अद्भुत अंकन' है।

(iii) अलेखन :- अलेखनों में 'कमलपुष्प की प्रधानता' है।

18. सेवकराम, फकीरचंद, शिवदयाल "कम्पनीशैली" के चित्रकार थे।

कंपनी शैली का संक्षिप्त वर्णन :- कम्पनी शैली ब्रिटिश कलाकारों भारतीय कलाकारों व ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रयासों का परिणाम थी। भारत में अंग्रेजों ने जिस कला शैली को विकसित किया वह 'कम्पनी शैली' कहलाती है। इस शैली के विकास में राजा रवि वर्मा, ई-वी. हैवेल तथा अवनींद्रनाथ ठाकुर का योगदान महत्वपूर्ण था। समुद्र का मान भंग, यात्रा का अंत आदि इस शैली के प्रमुख चित्र थे।

19. "शोकाकुल स्त्री" चित्र पर संक्षिप्त टिप्पणी

'शोकाकुल स्त्री' का चित्र बाघ की "गुफा संख्या 04" में स्थित है। इस चित्र के संदर्भ में कुछ विद्वानों का मत है कि यह चित्र भगवान बुद्ध के विरह में यशोधरा का है। चित्रकार ने कुशल रेखांकन, रंगयोजना के माध्यम से चित्र के समस्त भावों को अभिव्यक्त किया है। इस चित्र में नारी के सौंदर्य को मुख्य रूप स्पष्ट किया गया है। चित्र के पीछे के भाग में अन्य आकृतियों का भी चित्रण किया गया है।

20. 'वाश पद्धति' मुख्य रूप से 'जापान देश' की है।

भारत में वाश पद्धति में चित्रण करने वाले प्रमुख चित्रकार "अवनींद्रनाथ ठाकुर" थे। जो 'कम्पनी शैली' से सम्बंध रखते थे। अतः भारत में 'वाश पद्धति' को सर्वप्रथम

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

कम्पनी शैली में तथा बाद में अन्य शैलियों बंगाल आदि में भी अपनाया गया। वाश पद्धति के माध्यम से ही अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने 'यात्रा का अंत' चित्र की रचना की।

21. राजस्थान में पद्मश्री से पुरस्कृत चित्रकारों के नाम निम्नलिखित है-
(i) स्व. रामगोपाल विजयवर्गीय
(ii) स्व. कृपालसिंह शेखावत।

22. यामिनीराय ने अपने चित्रण में लोक शैलियों व चिन्हों को संजोया। ये प्रमुख भारतीय चित्रकार थी जिनके चित्रों पर 'बंगाल की लोककला' तथा 'बिहार के पट्टचित्रण' का प्रभाव था। इनका जन्म सन 1887 में ग्राम बेलियातोर बांकुरी जिला, प. बंगाल में हुआ। बचपन में ही चित्रकला के प्रति रुझान था बंगाल में कुम्हारों, खिलौने बनाने वालों आदि की कला को इन्होने देखा तथा अपनी कला में उन तत्वों का समावेश किया।

23. के के हेब्बार का पूरा नाम "कांटिगेरी कृष्ण हेब्बार" था।
के के हेब्बार का जन्म सन 1912 में तथा कांटिगेरी (कर्नाटक) नामक स्थान पर हुआ था।

24. एन. एस. बेन्द्रे के 3 चित्रों के नाम निम्नलिखित है-
(i) सहेलियाँ
(ii) कुएँ से पानी लाती महिलाएँ
(iii) नर्तकी।

25. 'मरता हुआ भैंसा' नामक चित्र "सिंधनुर की एक गुफा में" स्थित है।
चित्र में व्यक्त भाव:- इस चित्र में एक भैंसे को मरणावस्था में चित्रित किया गया है। चित्रकार ने भैंसे का मर्मस्पर्शी वर्णन किया है। चित्र में सशक्त संयोजन, अद्भुत रेखांकन है जो सम्पूर्ण मनोभावों को अभिव्यक्त

RSTR-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

कर देने वाला चित्रित हुआ है। पास ही आखेटकों के एक दल का भी अंकन स्वाभाविकता से किया गया है। यह चित्र प्रागैतिहासिक काल का एक प्रमुख चित्र है। जो चित्र निर्माण की सम्पूर्ण विशेषताओं से युक्त है। प्राण त्यागते भैंसे का चित्रण कर चित्रकार ने शिकार पर अपनी सुनिश्चितता तथा प्रकृति पर अपनी विजय की भावना को अभिव्यक्त किया है। चित्र में भैंसे के अंग-प्रत्यंगों की बनावट सुस्पष्ट, गतिशील रेखांकन व वातावरणानुकूलित रंगयोजना है। अतः यह चित्र सिंघनपुर की गुफा का सर्वप्रमुख चित्र है।

26 राहुल समर्पण नामक चित्र का वर्णन

'राहुल समर्पण' नामक चित्र अजन्ता गुफा चित्रों में सबसे प्रमुख है। यह चित्र अजन्ता की गुफा संख्या 17 का प्रमुख चित्र है। वैराग्य धारण करने के बाद पहली बार भिक्षा मांगने के लिए यशोधरा के दर पर आए भगवान बुद्ध का चित्रण कुशलतापूर्वक किया गया है। भगवान बुद्ध के हाथों में भिक्षा का एक पात्र है। याचनापूर्ण तरीके से भिक्षा मांगते हुए भगवान बुद्ध को चित्रित किया गया है। वहीं दूसरी ओर बालक राहुल तथा यशोधरा का चित्रण किया गया है। भगवान बुद्ध की आकृति को बड़ी तथा आकर्षक चित्रित करके प्रभाविकता दिखाई गई है। यशोधरा द्वारा अपने पुत्र राहुल को दान में देते हुए चित्रित किया गया है। कुशल रेखांकन, भावभंगिमाएं तथा रंगयोजना आकृतियों को और प्रभावशाली बना देता है।

27. रविन्द्रनाथ ठाकुर की कला पर टिप्पणी

रविन्द्रनाथ ठाकुर बंगाल शैली तथा भारत की आधुनिक कला के महत्व एक कड़ी थे। इनका जन्म सन 1861 में जोरासांको कलकत्ता में हुआ था। प्रारंभ में इनकी रुचि चित्रकला में न होकर 'काव्यकला' में थी। 60 वर्ष की लंबी काव्यसाधना के बाद सन 1928 में इनका रुझान चित्रकला की ओर गया। 'गीतांजली' नामक कृतिपर इन्हे नोबेल प्राप्त हुआ था।

—कला सम्बंधी विशेषताए अग्रलिखित है —

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(i) इनकी कला पर पाश्चात्य कला के साथ-साथ बंगाल शैली का प्रभाव पड़ा।
(ii) चित्रों में वातावरण के अनुकूलित तथा चटकीले रंगों का अद्भुत प्रयोग।
(iii) प्रवाही रंगों में भूदृश्यों का चित्रण।
(iv) मानव मन के मनोभावों का गतिशील चित्रण पद्धति के माध्यम से अभिव्यक्त किया।

28 राजस्थानी चित्रशैली पर निबंध अथवा संक्षिप्त टिप्पणी

राजस्थानी शैली से आशय:- 15वीं शताब्दी में प्रचलित जैन शैली की परम्परा में एक नया कलेवर लेकर राजस्थान में जो कला शैली विकसित हुई, उसे राजस्थानी शैली के नाम से जाना जाता है। अर्थात् राजस्थानी शैली जैन शैली की परम्परा का रचनात्मक परिणाम थी। राजस्थानी शैली का प्रारंभ लगभग 17वीं शताब्दी में माना जाता है। सुपासनाह-चरियम नामक ग्रंथ इसका प्रमाण है। डॉ. कार्ल खण्डालावाला के अनुसार राजस्थानी शैली 17वीं तथा 18वीं शताब्दी के आरम्भ में अपने चरमोत्कर्ष पर थी। अर्थात् यह राजस्थानी शैली का 'स्वर्णकाल' कहलाता है।

राजस्थानी शैली का शैलीगत विभाजन:- राजस्थान की प्रमुख शैलियों का शैलीगत विभाजन निम्नानुसार है-

1. मेवाड़ शैली - कुंभलगढ़, चितौड़गढ़, चावण्ड, नाथद्वारा।
2. मेवात शैली - शेखावाटी, जयपुर, उदयपुर, अलवर।
3. हाड़ौती शैली - कोटा, बूंदी, झालावाड़।
4. मारवाड़ शैली - बीकानेर, किशनगढ़, जोधपुर।

राजस्थानी शैली के प्रमुख विषय:- राजस्थानी शैली पर मुख्य रूप से मुगल चित्रकला का प्रभाव पड़ा था। इस कारण अधिक चित्र विषय मुगल काल से सम्बंधित ही थे। युद्ध, शिकार, दरबारी दृश्य,

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

प्रकृति आदि राजस्थानी शैली के प्रमुख विषय थे। लेकिन मुख्य रूप से रागमाला, रसिकप्रिया, बारहमासा, रागिनीवल, राग-रागिनी आदि से सम्बंधित थे। राजस्थानी शैली के चित्र बिहारी, सूरदास, कबीर, बिहारी आदि के गीतों पर भी आधारित थे।

राजस्थानी शैली के प्रमुख चित्र:- राजस्थानी शैली के प्रमुख चित्र निम्नलिखित है-

(i) बणी-ठणी - किशनगढ़ शैली का प्रमुख चित्र है। जो सावंतसिंह 'नागरीदास' के समय में बना था। इस चित्र को मोरध्वज निहालचंद ने बनाया था। बणी-ठणी को एक हाथ से घूंघट किए तथा दूसरे हाथ में कमल की कलियों को लिए चित्रित किया गया है।

(ii) रामसिंह शेर का शिकार करते हुए - कोटा शासक रामसिंह शेर का शिकार करते हुए कोटा शैली का प्रमुख चित्र है इस चित्र में रामसिंह को महल की छत पर खड़े होकर बंदूक से शेर का शिकार करते हुए चित्रित किया गया है।

(iii) मेरु-रागिनी - यह मेवाड़ शैली का प्रमुख चित्र है इसमें ऊपरी फलक पर हिंडोला तथा मारू को आपने सामने बैठे चित्रित किया गया है व इसरी ओर नीचले फलक पर मारू को ऊंट से प्यार करने के मुद्रा में चित्रित किया है।

(iv) अन्य चित्र - इनसब के अलावा "उम्मेदसिंह सुअर का शिकार करते हुए (बूंदी शैली) का प्रमुख चित्र है, खुली बीर्घा पर बैठी महिलाएं (बीकानेर शैली) आदि भी प्रमुख चित्र है।

राजस्थानी शैली के चित्रों की विशेषताएं - राजस्थानी शैली के चित्रों

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

की विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

(i) रंगयोजना - लाल, काले, पीले, हरे रंगों के साथ-साथ सोने तथा चांदी के रंगों का भी प्रयोग किया गया है।

(ii) विषय-विविधता - रागमाला, बारहमासा, रासिकप्रिया आदि विषयों का चित्रण हुआ है।

(iii) जनप्रतिनिधित्व - विभिन्न कलाकारों ने राजस्थानी शैली में अपना योगदान दिया है।

(iv) नारी सौंदर्य - राजस्थानी शैली में नारी सौंदर्य की प्रधानता है। आभूषणों से अलंकृत चित्रित किया गया है।

29 प्रागैतिहासिक कला पर निबंध

2017

उद्भव व विकास

प्रागैतिहासिक कला का उद्भव प्रागैतिहासिक काल में हुआ जब आदिमानव गुफाओं में रहा करता था। दिवारों को कुरेदकर खनिज रंगों के माध्यम से गुफाओं में जो रेखांकन किया वह आदिमानव की मनोवृति का परिचायक है। प्रागैतिहासिक कला का उद्भव 50000 ईसा वर्ष पूर्व से 5000 ईसा वर्ष पूर्व माना जाता है।

प्रागैतिहासिक कला का विकास चार चरणों में हुआ- हिमयुग, प्रस्तरयुग, धातुयुग तथा सभ्यता काल। आदिमानव द्वारा बनाएं गए चित्रों से ही प्रागैतिहासिक कला का उद्भव माना जाता है।

प्रागैतिहासिक कला के प्रमुख केन्द्र

प्रागैतिहासिक कला के प्रमुख केन्द्र थे- रायगढ़ रियासत में सिंघनपुर, मध्य भारत में होशंगाबाद, पंचमढ़ी, भीमबेटका, चक्रधरपुर आदि।

1. सिंघनपुर - सिंघनपुर से बाघ, भैंसा, घोड़ा, सुअर आदि चित्र प्राप्त हुए हैं

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | पूरीक्षार्थी उत्तर

इनके अलावा "मरता हुआ भैंसा" यहाँ का प्रमुख चित्र है। सामुहिक नृत्य का सुंदर अंकन भी यहाँ किया गया है।

2. भीमबेटका - भीमबेटका मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से 40 कि.मी. दूर भीमबेटका नाम का पहाड़ी है। इसकी खोज का श्रेय प्रो. वाकणकर को दिया जाता है। यहाँ 500 गुफाओं का पता लगाया गया। यहाँ के चित्रों में लाल, काला, सफेद रंगों का प्रयोग है। शिकार के चित्र यहाँ से प्राप्त हुए। आदिमानव के विकसित स्वरूप का चित्रण व जंगली जानवरों के चित्रण।

3. मिर्जापुर - मिर्जापुर विंध्याचल पर्वत श्रृंखलाओं में उत्तर प्रदेश में स्थित है। यहाँ 'कराहते हुए सुअर' का चित्र महत्वपूर्ण है। इसके अलावा "लिखनिया गुफा में हाथी का आखेट" प्रमुख है।

4. पंचमढ़ी - पंचमढ़ी मध्यप्रदेश में है। यहाँ से सशस्त्र युद्ध व नृत्यवादन के चित्र प्राप्त हुए हैं। इसके अलावा दैनिक जीवन के क्रियाकलापों, बाजार केव से विशालकाय बकरी का चित्र महत्वपूर्ण है।

BSER-161/2017

प्रागैतिहासिक चित्रों का उद्देश्य

प्रागैतिहासिक चित्रों का उद्देश्य निम्नलिखित था -

(i) प्रकृति पर अपनी विजय का दर्शाना।
(ii) अमूर्त भावना को मूर्त रूप देना।
(iii) जादू-टोने के माध्यम से शिकार की सुनिश्चितता।
(iv) आसपास के वातावरण की स्मृति बनाए रखना।

प्रागैतिहासिक चित्रों के विषय

प्रागैतिहासिक चित्रों का निर्माण आदिमानव ने आसपास के वातावरण से प्रभावित होकर किया। आदिमानव के चित्रों का प्रमुख विषय उसके आसपास का वातावरण, जीव जन्तु, पशु-पक्षी तथा प्रकृति थी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

तथा इन्हीं के चित्र आदिमानव ने स्वाभाविकता के साथ बनाएँ हैं।

प्रागैतिहासिक काल के प्रमुख चित्र

(i) मरता हुआ भैंसा - यह चित्र सिंहनपुर की एक गुफा से प्राप्त हुआ है।

(ii) भैंसे का आखेट - यह चित्र होशंगाबाद की आदमकद गुफा में प्राप्त हुआ है।

(iii) कराहता हुआ सुअर - यह चित्र मिर्जापुर की एक गुफा से प्राप्त हुआ है।

(iv) जादू-येने के चित्र - दक्षिण भारत के वायनाड के एडक्कल से जादू येने के चित्र प्राप्त हुए हैं।

प्रागैतिहासिक चित्रों की विशेषताएं

(i) प्रकृति का अद्भुत अंकन।

(ii) चित्रों की शैली आत्मिक उल्लास व आवेग से परिपूर्ण है।

(iii) काला, लाल, सफेद रंगों के साथ-साथ खड़िया आदि का प्रयोग।

(iv) रेखाओं की प्रधानता।

30. बंगाल शैली पर एक लेख

- बंगाल शैली का उद्भव व विकास

बंगाल शैली दो संस्कृतियों के आदान प्रदान के कारण बंगाल में उत्पन्न हुई थी ये दो संस्कृतियाँ भारतीय तथा यूरोपीय थी। जो कला आंदोलन बंगाल से आरंभ हुआ स्वतंत्र कला इतिहास में बंगाल शैली के नाम से जाना जाता है।

बंगाल शैली के विकास की उत्तरदायी परिस्थितियाँ निम्न थी-

(i) बंगाल शैली बौद्धिक विचार व स्वदेश प्रेम का प्रतिफल थी।

BSTR-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) कोलकाता का प्रमुख सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र होना।
(iii) अवनीन्द्रनाथ ठाकुर, नंदलाल बसु, क्षितीन्द्रनाथ मजुमदार, शैलेन्द्रनाथ डे आदि का योगदान।
(iv) लोगों में राष्ट्रवाद की एक भावना का विकास।

- बंगाल शैली के प्रमुख चित्रकार व रचनाएं
बंगाल शैली के प्रमुख चित्रकार तथा उनकी रचनाएं निम्नलिखित है-
(i) नंदलाल बसु- इनका जन्म 1883 में मुंगेर हवेली, खड़गपुर में हुआ था। इनके प्रमुख चित्र पार्थसारथी, गरुड़ स्तंभ के नीचे श्रीचैतन्य, शिव का विषपान आदि है।

(ii) असितकुमार हल्दार - ये अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रमुख शिष्य थे। इन्होने पुनरुत्थान कला आंदोलन को प्रभावित किया। इनकी चित्र श्रृंखलाओं में कुणाल, उमरखय्याम की श्रृंखला, रहस्य आदि प्रमुख है।

(iii) देवीप्रसादराय चौधरी - इनको चित्रकला की अपेक्षा मूर्तिकला के क्षेत्र में जाना जाता है इनको प्रमुख सम्मान पद्मभूषण प्राप्त हुआ था।

- बंगाल शैली के चित्रों के विषय
बंगाल शैली के चित्रों के विषय निम्नलिखित थे-
(i) भारतीय लोकसंस्कृति व लोककला।
(ii) ग्रामीण जीवन व लहराते खेत।
(iii) बंगाल की लोकपरम्पराएं।
(iv) राष्ट्रभक्ति से संबंधित विषय।

—

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

- बंगाल शैली की विशेषताएँ

बंगाल शैली की विशेषताएं निम्नलिखित है—

(i) बौद्धिक विचार व स्वदेशप्रेम का प्रतिफल।

(ii) चित्रों में जो रंगयोजना अपनाई गई है उसे वाशपद्धति के नाम से जाना जाता है।

(iii) बंगाल शैली में टैंपरा तथा जलरंग पद्धति को भी काम में लिया गया है।

(iv) यह शैली अजन्ता, बाघ तथा मुगल शैली से प्रभावित थी।

- बंगालशैली के प्रमुख चित्र

बंगाल शैली के प्रमुख चित्र निम्नलिखित है—

(i) पार्थसारथी - यह चित्र नंदलाल बसु द्वारा वाशपद्धति में बनाया गया। चित्र में भगवान बुद्ध को विचारमग्न मुद्रा में चित्रित किया गया है। चित्र में छायाप्रकाश सिद्धान्त का पूर्णपालन किया गया है।

(ii) गरुड़ स्तंभ के नीचे श्रीचैतन्य - यह चित्र नंदलाल बसु द्वारा बनाया गया प्रमुख चित्र है। इस चित्र में श्रीचैतन्य देव को गरुड़ स्तंभ के टेक लगाये चित्रित किया गया है। चित्र में छाया-प्रकाश के सिद्धान्त का पूर्णपालन किया गया है।

(iii) यात्रा का अंत - यात्रा का अंत नामक चित्र बंगाल शैली का प्रमुख चित्र है जो अवनींद्रनाथ ठाकुर का प्रमुख चित्र है। इसमे बोझ से लदे हुए ऊँट की जीवन यात्रा का मर्मस्पर्शी वर्णन है। ऊँट असीम बोझ से लदा है। तथा जीवन के अंतिम मोड़ पर पहुंच गया है।

समाप्त

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-161/2017